

B. B. S. S. S. SCHOOL

**Class-6**

SUB-HINDI(CH-2)

## वर्ण विचार

वर्ण

वर्ण उस मूल ध्वनि को कहते हैं, जिसके खंड या टुकड़े नहीं किये जा सकते। जैसे- अ, ई, व, च, क, ख् इत्यादि।

वर्ण भाषा की सबसे छोटी इकाई है, इसके और खंड नहीं किये जा सकते।

उदाहरण द्वारा मूल ध्वनियों को यहाँ स्पष्ट किया जा सकता है।

'राम' और 'गया' में चार-चार मूल ध्वनियाँ हैं, जिनके खंड नहीं किये जा सकते- र + आ + म + अ = राम, ग + अ + य + आ = गया। इन्हीं अखंड मूल ध्वनियों को वर्ण कहते हैं। हर वर्ण की अपनी लिपि होती है। लिपि को वर्ण-संकेत भी कहते हैं। हिन्दी में 52 वर्ण हैं।

**उत्सव = उ + त् + स् + अ + व् + अ**

**“वह सबसे छोटी ध्वनि जिसके और टुकड़े नहीं किए जा सकते, वर्ण कहलाती है।”**

### **वर्णमाला**

**किसी भाषा में प्रयोग होने वाले वर्णों के क्रमबद्ध समूह को वर्णमाला कहते हैं।**

**जैसे → अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ, अं, अः, क, ख, ग, घ, ङ**

**→ आगत ध्वनियाँ = ऑ, ज़, फ़**

**→ हिंदी वर्णमाला में कुल 52 वर्ण हैं।**

### **वर्ण के भेद**

**1. स्वर**

**2. व्यंजन**

#### **स्वर – स्वर के भेद**

**जिन वर्णों का उच्चारण करते समय हवा मुँह में बिना रुके बाहर निकलती, उन्हें स्वर कहते हैं।**

**→ स्वरों का उच्चारण स्वतंत्र रूप से बिना किसी दूसरे वर्ण की सहायता के किया जाता है।**

**→ हिंदी में 11 स्वर होते हैं।**

**→ अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ**

**स्वर के भेद**

**ह्रस्व स्वर**

**दीर्घ स्वर**

**प्लुत स्वर**

**(1) ह्रस्व स्वर →**

**जिन स्वरों के उच्चारण में बहुत कम समय लगता है, उन्हें ह्रस्व स्वर कहते हैं**

|

**→ ह्रस्व स्वर चार होते हैं -**

**अ, इ, उ, ऋ**

**(2) दीर्घ स्वर →**

**जिन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व स्वर से लगभग दोगुना समय लगता है, उन्हें दीर्घ स्वर कहते हैं।**

**→ दीर्घ स्वर सात होते हैं →**

**आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ।**

**(3) प्लुत स्वर →**

**जिन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व स्वर से तीन गुना अधिक समय लगता है, उन्हें प्लुत स्वर कहते हैं।**

**→ जिस स्वर का उच्चारण प्लुत के रूप में किया जाता है उसके आगे हिंदी की गिनती का अंक ३ (तीन) लिखा जाता है।**

**जैसे → ओ३म्, भैया३, काका३**

**स्वरों की मात्राएँ**  
**मात्र → स्वरों के निश्चित चिह्नों को मात्र**  
**कहते हैं।**

**व्यंजन - व्यंजन के भेद**  
**जिन वर्णों का उच्चारण स्वरों की**  
**सहायता से किया जाए तथा हवा कंठ**  
**से निकल कर, मुँह में रुककर बाहर**  
**आए, उन्हें व्यंजन कहते हैं। हिंदी में**  
**मूल व्यंजन 33 है।**

**व्यंजन के भेद**  
**स्पर्श व्यंजन**  
**अंतस्थ व्यंजन**  
**ऊष्म व्यंजन**  
**1. स्पर्श व्यंजन →**

**जिन व्यंजनों का उच्चारण करते समय**  
**हवा कंठ, तालु, मूर्धा, दाँत या ओठों**  
**का स्पर्श करके मुख से बाहर आती है,**  
**उन्हें स्पर्श व्यंजन कहते हैं।**

**→ स्पर्श व्यंजन 25 होते हैं (क् से म)**  
**तक**

**→ स्पर्श व्यंजन को पाँच भागों में बाँटा**  
**जा सकता है -**

**स्पर्श व्यंजन हैं -**

**2. अंतस्थ व्यंजन → जिन व्यंजनों का**  
**उच्चारण स्वरों और व्यंजनों के मध्य**  
**का होता है, उन्हें अंतस्थ व्यंजन कहते**  
**हैं।**



## 1. स्पर्श व्यंजन →

जिन व्यंजनों का उच्चारण करते समय हवा कंठ, तालु, मूर्धा, दाँत या ओठों का स्पर्श करके मुख से बाहर आती है, उन्हें स्पर्श व्यंजन कहते हैं।

→ स्पर्श व्यंजन 25 होते हैं (क् से म) तक

→ स्पर्श व्यंजन को पाँच भागों में बाँटा जा सकता है -

स्पर्श व्यंजन हैं -

2. अंतस्थ व्यंजन → जिन व्यंजनों का उच्चारण स्वरों और व्यंजनों के मध्य का होता है, उन्हें अंतःस्थ व्यंजन कहते हैं।

अंतस्थ व्यंजन चार हैं - य र ल व

3. ऊष्म व्यंजन → जिन व्यंजनों का उच्चारण करते समय हवा मुँह में टकराकर ऊष्म (गर्मी) पैदा करती है, उन्हें ऊष्म व्यंजन कहते हैं।

ऊष्म व्यंजन भी चार हैं - श ष स ह

## अभ्यास

1. वर्ण किसे कहते हैं?
2. स्वर किसे कहते हैं? स्वर के कितने भेद होते हैं?
3. व्यंजन किसे कहते हैं? व्यंजन के कितने भेद होते हैं?
4. निम्नलिखित रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—  
 (क) भाषा की सबसे छोटी इकाई को ..... कहते हैं।  
 (ख) वर्णों के व्यवस्थित समूह को ..... कहते हैं।  
 (ग) स्वर के तीन भेद होते हैं— 1. .... 2. .... 3. .... ।  
 (घ) व्यंजन के उच्चारण में ..... लेनी पड़ती है।  
 (ङ) वर्ण भाषा की सबसे ..... इकाई कहलाती है।
5. निम्नलिखित शब्दों के शुद्ध रूप लिखिए—  
 (क) परिवारिक ..... (घ) बिमारी ..... (छ) दवाईयाँ .....  
 (ख) ग्रहकार्य ..... (ङ) श्रीमति ..... (ज) आशीवाद .....  
 (ग) अत्याधिक ..... (च) आलौकिक ..... (झ) साश्रीय .....
6. निम्नलिखित शब्दों में अनुस्वार (ँ) तथा अनुनासिक (ँ) की मात्रा लगाकर इन्हें पूरा कीजिए—  
 (क) आगन ..... (घ) काच ..... (छ) शख .....  
 (ख) कगन ..... (ङ) चाद ..... (ज) बासुरी .....  
 (ग) गाव ..... (च) आख .....
7. निम्नलिखित शब्दों के वर्ण-विच्छेद कीजिए—  
 (क) सुंदर - .....  
 (ख) श्रीमान - .....  
 (ग) क्षमा - .....  
 (घ) ज्ञान - .....  
 (ङ) लोकप्रिय - .....  
 (च) व्याकरण - .....  
 (छ) अक्षर - .....
8. निम्नलिखित वर्णों को जोड़कर शब्द बनाइए—  
 (क) च् + अ + ज् + च् + अ + ल् + अ = .....  
 (ख) ग् + ऋ + ह् + अ = .....  
 (ग) न् + आ + म् + अ = .....